MANIPAL UNIVERSITY
JAIPUR

FACULTY OF Design

School Of Architecture and Design

Gender and Cities: Workshop and Symposium

Date of Event – 13 Sep-16 Sept, 2021

Content of Report (index) (Page number may not be required)

1. Introduction of the Event
2. Objective of the Event
3. Beneficiaries of the Event
4. Details of the Guests
5. Brief Description of the event
6. Photographs
7. Brochure or creative of the event
8. Schedule of the Event
9. Attendance of the Event
10. News Publication
11. Feedback of the Event
12. Link of MUJ website

1. **Introduction of the Event**

3 days online students workshop "No City for Women? from 14 sept -16 sept 2021". It was organised as a series of online events by the Alliance Francaise network and French institute in India.

2. **Objective of the Event**

The workshop was designed by Social Design Collaborative and hosted as part of the United Nations programming for 2021 under the label of Forum Generation Equality. Workshop was focused on exploring the idea of gender in two planned cities of India.

3. **Beneficiaries of the Event**

- Aspiring architecture Students, recent graduates in the field of architecture, design, planning, etc. from 5 different colleges.

4. **Details of the Guests**

a. Chris Blache
b. Czaee Malpani
c. Sarovar Zaidi
d. Dr. Anuradha Chatterjee
e. Swati Janu
f. Madhvi Desai
g. Anu Sabhlok

5. **Brief Description of the event**

The project titled "No City for Women?" is a provocative reimagining of city planning, architecture, and design thinking with regard to challenging a heteronormative, male dominated perspective of building cities and creating public spaces. Workshop was a provocative re-imagination of urban design, architecture and design thinking to challenge a heteronormative, male centric perspective of building cities and create an inclusive dialogue on cities for all. Among the institutions selected, MUJ was one of the three along with IICD and Aayojan School of Architecture from Rajasthan. Chitkara University and Chandigarh College of Architecture are the ones from Punjab.

Six students from each institution were selected to participate in the workshop. The students interacted with various interdisciplinary expert

and students from other colleges and worked on different types of public spaces with the lens of gender and inclusivity. The outcome of the students work was presented on online public symposium on 29 sept 2021. Dr. Anuradha Chatterjee (Dean FoD) has joined the workshop as the workshop expert and Ar. Jyoti Yadav as faculty coordinator from the SA&D Manipal University Jaipur.

6. **3 to 5 photographs of the event or screenshots of the event** (if online) with captions

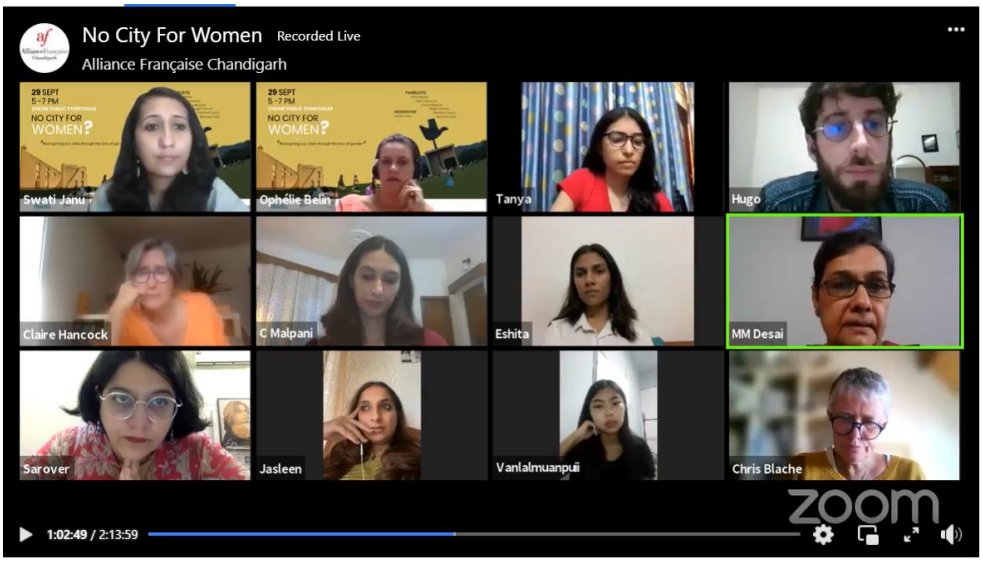

Figure..1 Student's Interaction with Experts

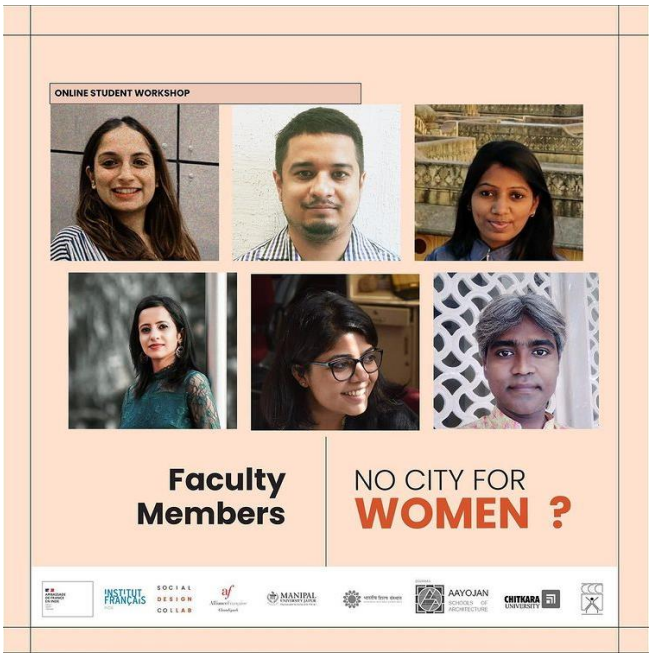

Figure. 2 Faculty coordinators of different colleges

Figure. 2 Students Participated from SA&D

7. Brochure or creative of the event (insert in the document only)

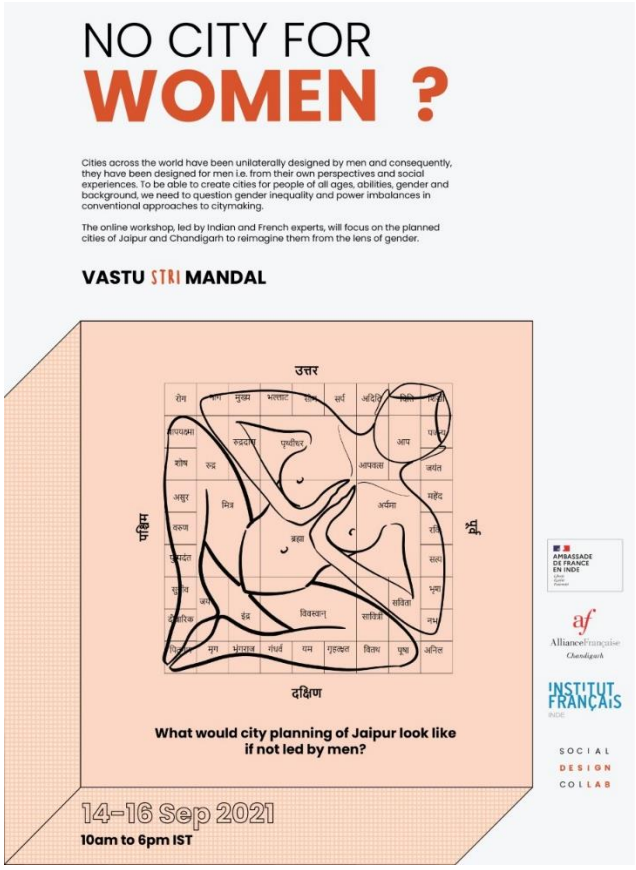

8. **Schedule of the event**

The event was scheduled from 13 September to 16 September via online mode.

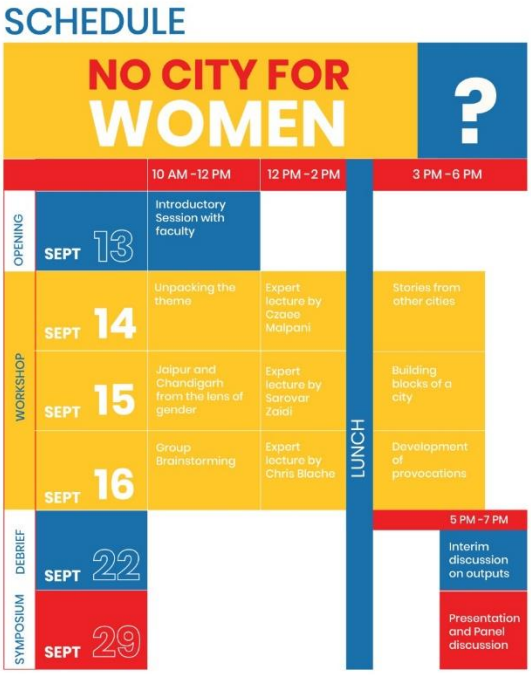

9. **Attendance of the Event** (insert in the document only)

- List of Schools:
    1. Vardhan Pandharpurkar
    2. Aditi Verma
    3. Milind Anurag
    4. Manya Sharma
    5. Reetika Tandon
    6. Riddhi Aggarwal
    7. Malika handa
    8. Anshu Singh
    9. Aditi Pathak
    10. Tanya
    11. Eshita Dhadwal
    12. Muanpui Pachuau
    13. Tanushree
    14. Akansha
    15. Shagun
    16. Mitali
    17. Himanshu
    18. Madduri

MANIPAL UNIVERSITY
JAIPUR
INSPIRED BY LIFE

10.**News Publication- News printed in newspaper or online links if any for**

दैनिक भास्कर सिटी लाइफ 01-10-2021

citylife CHANDI GEDI

महिलाओं, दिव्यांगों और बुजुर्गों की जरूरत के हिसाब से शहर को डिजाइन करना चाहिए

Symposium

ऑलियांस फ्रांसिस द्वारा ऑनलाइन आयोजित 'नो सिटी फॉर वुमन' सिंपोजियम में देश और विदेश के एक्सपर्ट ने आर्किटेक्ट पर बात की।

शंकर सिंह | चंडीगढ़

कोई ऐसा शहर जो केवल महिला आर्किटेक्ट ने डिजाइन किया हो? आप शायद ढूंढ नहीं पाएंगे। जो भी शहर डिजाइन हुए, उसे ज्यादातर पुरुष आर्किटेक्ट ने ही डिजाइन किया। इससे वो पहलू अक्सर छूट जाते हैं, जिससे महिलाओं की जरूरत के अनुसार कुछ आर्किटेक्ट फ्रीडम मिले। हमें ऐसा माहौल क्रिएट करना होगा, जहां महिलाएं सुरक्षित महसूस करें। यह कहना है एंथ्रोपोलॉजिस्ट क्रिस ब्लाश का। दरअसल, ऑलियांस फ्रांसिस द्वारा आयोजित ऑनलाइन सिंपोजियम 'नो सिटी फॉर वुमन' में देश-विदेश के एक्सपर्ट के अलावा विभिन्न राज्यों के आर्किटेक्ट स्टूडेंट्स जुड़े। इसमें खुले स्थानों में महिलाओं के बैठने के लिए फर्नीचर, उनके खेलने के लिए विशेष ग्राउंड और पब्लिक टॉयलेट जैसी सुविधाओं पर चर्चा हुई। महिला आर्किटेक्ट के बारे में बात करते हुए क्रिस ब्लाश बोले- महिलाएं हर तरह का आर्किटेक्चर इस्तेमाल कर सकती हैं, उन्हें सुरक्षा का आभास करवाना जरूरी है। एक दिक्कत ये भी है कि आप किसी ग्राउंड या सिटिंग स्पेस को किसी एक जेंडर के अनुसार डिजाइन नहीं कर सकते। ऐसे में हमारे लिए अच्छा माहौल डेवलप करना जरूरी है।

सेशन में शामिल हुए क्लेयर हैंकॉक बोले- हमें शहर ऐसे डिजाइन करने होंगे जो लोगों की केयर करें। केवल महिलाओं की नहीं, दिव्यांग और बुजुर्ग लोगों की भी। महिलाओं के पास अक्सर समय कम होता है, तो ऐसा क्या हो सकता है कि उनका समय बचे। वो कहीं भी घूम सकें और बुजुर्गों को आस पास ही चीजें मिल सकें। ऐसी प्लानिंग हो कि लोकल लोगों को सब आसानी से मिल सके।

इस सेशन में गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्किटेक्ट, चंडीगढ़, चितकारा यूनिवर्सिटी, जयपुर और मणिपाल यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट्स ने प्रोजेक्ट्स डिस्कस किए। स्टूडेंट्स ने तीन दिनों की वर्कशॉप के आधार पर उन्होंने प्रोजेक्ट तैयार किए थे।

Swati Janu | Sarover | C Malpani | Chris Blache | Clair Hancock | Ophele Belin | Hugo | MM Desai | Nicolas Gherard

अपने ही शहर से बातचीत नहीं कर पा रहे लोग...

स्कॉलर ह्यूगो ड्यूनो बोले- लोग अपने ही शहरों से वार्तालाप नहीं करते जिसकी वजह से वो एक खूबसूरत लिंक खो रहे हैं। वो रेस्टोरेंट और अन्य जगहों पर जाना पसंद करते हैं लेकिन शहर की प्रमुख और इंटरैक्ट करने वाली जगहों पर नहीं। शहरों में लोग सीमित हो जाते हैं और सिर्फ अपने घर-परिवार तक ही रह जाते हैं। लोग घरों से बढ़कर शहर के बारे में सोचें, उसकी साफ सफाई और वहां सुरक्षा कितनी है इसके बारे में सोचें, तो एक अलग अवेयरनेस आएगी।

स्मार्ट सिटी में महिलाओं के लिए भी प्लानिंग को जगह दी जानी चाहिए

आर्किटेक्ट माधवी देसाई ने कहा- महिलाओं के साथ भेदभाव होता आया है। इसकी शुरुआत घर से ही करनी होगी, ताकि हम इसका मुकाबला कर सकें। अभी तक जो भी आर्किटेक्ट डिजाइन हुए हैं, उसमें महिलाओं को उतनी जगह नहीं मिली। सरकार भी इसको लेकर उदासीन दिखाई देती है। ऐसे में स्मार्ट सिटी के नाम पर जो करोड़ों रुपए लगाए जा रहे हैं, उसमें महिलाओं की भागीदारी न के बराबर है। हमें महिलाओं के अनुसार शहर डिजाइन करने की जरूरत है। आर्किटेक्ट में महिलाओं को ज्यादा जगह देनी चाहिए, जहां वो बड़े लेवल पर प्लानिंग कर सकें।

महिलाओं के हिसाब से आर्किटेक्ट होना जरूरी है | फिलॉस्फर सरोवर जैदी ने कहा- महिलाओं के हिसाब से आर्किटेक्ट होना जरूरी है। अभी सार्वजनिक स्थानों में महिला टॉयलेट कितने हैं, उनकी क्या व्यवस्था है और कितने साफ हैं। इससे पता चलता है कि एक शहर और कस्बे का आर्किटेक्ट कैसा है। जरूरत है कि आर्किटेक्ट ऐसा हो कि जहां महिलाएं रात को भी निकल सकें। वो जहां भी चाहें जा सकें। इतनी सहूलियत एक आर्किटेक्ट की अच्छी प्लानिंग और सिक्योरिटी की बेहतर सर्विस से ही पॉसिबल है।

11.**Feedback of the Event (if obtained)**

NA

12.**Link of MUJ website stating the event is uploaded on website**

Head of Department
Prof. Sunanda Kapoor